CLASS : 12th (Sr. Secondary) **2055/2005**

Series : SS-M/2017

Total No. of Printed Pages : **24**

SET : A, B, C & D

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

SANSKRIT

Academic/Open

(Only for Fresh Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation*

and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :–

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना हैं। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार–विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

खण्डः 'क'

(अपठित-अवबोधनम्)

1. गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्न के उत्तर में संस्कृत व भाषा की शुद्धता होने पर प्रत्येक शुद्ध सटीक उत्तर के लिए **2** अंक देय है। अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $5 \times 2 = 10$

उत्तर :

(क) धारानगर्यां भोजो नाम राजा आसीत्।

(ख) धनिनः निर्धनानां सहायतां कुर्वन्ति स्म।

(ग) भोजः स्वराज्यं समृद्धम् अकरोत्।

(घ) भोजस्य राज्ये विद्यार्थिनः विद्याभ्यासं कुर्वन्ति स्म।

(ङ) भोजः यः कोऽपि विद्वान राजसदसि स्वकीयां कवितां, नवीनतम् आविष्कारं वा प्रस्तौति स्म तस्मै पुरस्कारम् अयच्छत्।

खण्डः 'ख'

(रचनात्मक-कार्यम्)

2. विषय-भाव-भाषा की अनुकूलता व शुद्धता होने पर मूल्यांकनकर्ता **12** वाक्यों के लघु निबन्ध पर अपने विवेक से अंक प्रदान कीजिए। 6

खण्डः 'ग'
(पठित-अवबोधनम्)

3. प्रस्तुत गद्यांश 'शाश्वती' (द्वितीयोभागः) के पृष्ठ-49, पञ्चमः पाठः 'शुकनासोपदेशः' तथा पृष्ठ-69, सप्तमः पाठः 'विक्रमस्यौदार्यम्' से संकलित हैं। मूल ग्रन्थ, पाठ का नाम, कवि का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक, सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

4. प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती' के चतुर्थः पाठः पृ० सं० 38, 'कर्मगौरवम्' तथा पृष्ठ-58, षण्ठः पाठः 'सूक्तिसुधा' से संकलित हैं। मूल ग्रन्थ, पाठ का नाम, कवि का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक, सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक, निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

5. सूक्ति की भावार्थ स्पष्टता पर 2 + 2 अंक निर्धारित किए गए हैं। छात्र इसमें अन्य भाषा के द्वारा भाव साम्य दिखला सकते हैं। $2 + 2 = 4$

(क) तृत्तीयः पाठः, 'बालकौतुकम्', पृष्ठ 27

(ख) द्वितीयः पाठः, 'रघुकौत्ससंवादः', पृष्ठ 15

(ग) एकादशः पाठः, 'उद्भिज्ज-परिषद्', पृष्ठ 93

(घ) द्वादशः पाठः, 'किन्तोःकुटिलता', पृष्ठ 101

6. प्रश्न का भाव-भाषा गत शुद्ध उत्तर होने पर एक-एक अंक देय है। $2 \times 1 = 2$

उत्तर :

(क) सप्तसमुद्राः सप्तद्वीपानाम् आवेष्टनरूपाः सान्ति।

(ख) अस्मद् शब्दः, तृतीया विभक्तिः

7. शुद्ध उत्तर पर ***एक अंक*** निर्धारित है। $2 \times 1 = 2$

उत्तर :

(क) जगत्सर्वं ईशावास्यम् अस्ति।

(ख) सर्वशब्दः, प्रथमा विभक्तिः

8. उत्तर : $2 \times 1 = 2$

(क) कैः ?

(ख) का ?

खण्डः 'घ'

(संस्कृत-साहित्य-परिचयः)

9. पं० हृषीकेश भट्टाचार्य ***अथवा*** महाकवि कालिदास में से एक का संक्षिप्त परिचय हिन्दी में लिखने पर विषय-संयोजक, भाषा-भाव की स्पष्टता पर **4** अंक देय हैं। अशुद्धता एवं विषयान्तर होने पर अंक काट लिए जाएँ। 4

10. ग्रन्थ परिचय पर भी उपरोक्त नियम लागू है। 4

(i) समुद्रसङ्गमः

(ii) श्रीमद्भगवद्गीता

खण्डः 'ङ'

(छन्दोऽलङ्कार-परिचयः)

11. दो छन्दों के शुद्ध संस्कृत भाषा में लक्षण-उदाहरण स्पष्ट करने पर पूर्ण अंक और अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $2 \times 4 = 8$

12. अलंकार के लक्षण-उदाहरण पर भी उक्त नियम लागू है।

$2 \times 4 = 8$

खण्डः 'च'

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्)

13. पूछे गए कारक, सन्धि, समास की परिभाषा के शुद्ध तथा स्पष्ट होने पर क्रमशः **2, 2, 2** अंक निर्धारित हैं। उदारता मर्यादित होनी चाहिए। $2 \times 3 = 6$

खण्ड : 'छ'

[बहुविकल्पीय-वस्तुनिष्ठप्रश्नाः]

14. (क) (ii) अन्यथा + इतः

(ख) (iii) तच्छ्रुत्वा

(ग) (i) दीर्घसन्धिः

(घ) (i) पुष्पाणां अञ्जलिः

(ङ) (i) कर्मधारयः

(च) (ii) महोत्साहः

(छ) (iii) कौ

(ज) (i) प्रथमा

(झ) (iv) याच्

(ञ) (iii) मध्यमपुरुष

(ट) (iv) क्तवतु

(ठ) (iii) उत्थितः

(ड) (ii) तृतीया

(ढ) (iv) गात्रम्

(ण) (ii) पत्रम्

(त) (iii) मूर्खः $16 \times 1 = 16$

SET – B

खण्डः 'क'

(अपठित-अवबोधनम्)

1. गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्न के उत्तर में संस्कृत व भाषा की शुद्धता होने पर प्रत्येक शुद्ध सटीक उत्तर के लिए **2** अंक देय हैं। अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $5 \times 2 = 10$

उत्तर :

(क) प्रपातः नद्याः प्रथमावस्था अस्ति।

(ख) नदी पर्वतेभ्यः निर्गत्य क्षेत्रेषु आगच्छति।

(ग) दूषितं जलं स्वास्थ्याय अहितकरम्।

(घ) नद्याः तटाः पक्षिणां कलरवैः, बालकानां क्रीडाभिः, स्त्रीणां च वार्तालापैः गुञ्जायमानाः भवन्ति।

(ङ) जलं प्राणिनां जीवानम्।

खण्डः 'ख'

(रचनात्मक-कार्यम्)

2. विषय-भाव-भाषा की अनुकूलता व शुद्धता होने पर मूल्यांकनकर्ता **12** वाक्यों के लघु निबन्ध पर अपने विवेक से अंक प्रदान कीजिए। 6

खण्डः 'ग'

(पठित-अवबोधनम्)

3. प्रस्तुत गद्यांश 'शाश्वती' (द्वितीयो भागः) के पृष्ठ-49, पञ्चमः पाठः 'शुकनासोपदेशः' तथा पृष्ठ-86, दशमः पाठः 'दीनबन्धुः श्रीनायारः' से संकलित हैं। पाठ का नाम, कवि का नाम, रचना का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक और सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

4. प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती' के चतुर्थः पाठः 'कर्मगौरवम्' पृष्ठ 38 तथा षष्ठः पाठः 'सूक्तिसुधा' पृष्ठ-58 से संकलित हैं। मूल ग्रन्थ,

पाठ का नाम, कवि का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक तथा सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

5. सूक्ति की भावार्थ स्पष्टता पर **2 + 2** अंक निर्धारित किए गए हैं। छात्र इसमें अन्य भाषा के द्वारा भाव साम्य दिखला सकता है। $2 + 2 = 4$

(क) प्रथमः पाठः, 'विद्ययाऽमृतमश्नुते', पृष्ठ-2

(ख) तृतीयः पाठः, 'बालकौतुकम्', पृष्ठ-30

(ग) एकादशः पाठः, 'उद्भिज्ज-परिषद्', पृष्ठ-93

(घ) सप्तमः पाठः, 'विक्रमस्यौदार्यम्', पृष्ठ-68

6. प्रश्न का भाव-भाषा गत शुद्ध उत्तर होने पर ***एक-एक*** अंक देय है। $2 \times 1 = 2$

(क) यज्ञे देवमुनिगन्धर्वयक्षसिद्धादयश्च समाहूताः।

(ख) सर्वा शब्दः प्रथमा विभक्तिः।

7. शुद्ध उत्तर पर ***एक*** अंक निर्धारित है। $2 \times 1 = 2$

(क) चातकोऽपि निर्गलिताम्बुगर्भं शरद्धनं न याचते।

(ख) प्रथमा विभक्तिः एकवचनञ्च।

8. उत्तर : $2 \times 1 = 2$

(क) काम् ?

(ख) कस्मात् ?

खण्डः 'घ'

(संस्कृत-साहित्य-परिचयः)

9. पं० भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ***अथवा*** पं० अम्बिकादत्तव्यास में से ***एक*** का संक्षिप्त परिचय हिन्दी में लिखने पर विषय - संयोजन, भाषा-भाव की स्पष्टता पर **4** अंक देय हैं। अशुद्धता एवं विषयान्तर होने पर अंक काट लिए जाएँ। 4

10. ग्रन्थ परिचय पर भी उपरोक्त नियम लागू है। 4

(i) रघुवंशम्

(ii) ईशावास्योपनिषद्

खण्डः 'ङ'

(छन्दोऽलङ्कार-परिचयः)

11. दो छन्दों के शुद्ध, संस्कृत भाषा में लक्षण-उदाहरण स्पष्ट करने पर पूर्ण अंक तथा अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $2 \times 4 = 8$

12. अलङ्कार के लक्षण-उदाहरण पर भी उक्त नियम लागू है। $2 \times 4 = 8$

खण्डः 'च'

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्)

13. पूछे गए कारक, सन्धि, समास की परिभाषा के शुद्ध तथा स्पष्ट होने पर क्रमशः **2, 2, 2** अंक निर्धारित हैं। उदारता मर्यादित होनी चाहिए। $2 \times 3 = 6$

खण्ड : 'छ'

[बहुविकल्पीय-वस्तुनिष्ठप्रश्नाः]

14. (क) (ii) जहाति + इह

(ख) (iii) तेनैव

(ग) (i) गुणसन्धिः

(घ) (ii) अश्रूणां धारा

(ङ) (iii) प्रकृतिसिद्धम्

(च) (ii) तत्पुरुषः

(छ) (i) सर्वान्

(ज) (iv) चतुर्थी

(झ) (i) ग्रह्

(ञ) (i) प्रथमपुरुषः

(ट) (iii) शानच्

(ठ) (ii) आगत्य

(ड) (iii) चतुर्थी

(ढ) (ii) नाकः

(ण) (i) व्यवहारः

(त) (ii) निर्भयम् $16 \times 1 = 16$

SET – C

खण्डः 'क'

(अपठित-अवबोधनम्)

1. गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्न के उत्तर में संस्कृत व भाषा की शुद्धता होने पर प्रत्येक शुद्ध सटीक उत्तर के लिए **2** अंक देय हैं। अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $2 \times 5 = 10$

उत्तर :

(क) आश्रमपदं निसर्गरमणीयं शान्तं पवित्रं च आसीत्।

(ख) आश्रमपदे ऋषयः वसन्ति स्म।

(ग) आश्रमे वरतन्तुः कुलपतिः आसीत्।

(घ) ऋषीणां तपः प्रभावात् पशवः पक्षिणश्च आश्रमपदे विचरन्ति स्म।

(ङ) कौत्सनामा बटुः वेदानां वेत्ता अभवत्।

खण्डः 'ख'

(रचनात्मक-कार्यम्)

2. विषय-भाव-भाषा की अनुकूलता व शुद्धता होने पर मूल्यांकनकर्त्ता **12** वाक्यों के लघु निबन्ध पर अपने विवेक से अंक प्रदान कीजिए। $1 \times 6 = 6$

खण्डः 'ग'
(पठित-अवबोधनम्)

3. प्रस्तुत गद्यांश 'शाश्वती' (द्वितीयो भागः) के पृष्ठ-48 पंचमः पाठः 'शुकनासोपदेशः' तथा पृष्ठ-78 नवमः पाठः 'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्' से संकलित हैं। पाठ का नाम, कवि का नाम, रचना का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक, सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित है। $1 \times 4 = 4$

4. प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती' के चतुर्थः पाठः 'कर्मगौरवम्' पृष्ठ-39 तथा षष्ठः पाठः 'सूक्तिसुधा' पृष्ठ-58 से संकलित हैं। मूल ग्रन्थ, पाठ का नाम, कवि का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक, सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

5. सूक्ति की भावार्थ स्पष्टता पर **2 + 2** अंक निर्धारित किए गए हैं। छात्र इसमें अन्य भाषा के द्वारा भाव साम्य दिखला सकता है। $2 + 2 = 4$

(क) प्रथमः पाठः 'विधयाऽमृतमश्नुते', पृष्ठ-3

(ख) सप्तमः पाठः 'विक्रमस्यौदार्यम्', पृष्ठ-68

(ग) द्वादशः पाठः 'किन्तोः कुटिलता', पृष्ठ-100

(घ) षष्ठः पाठः 'सुक्तिसुधा', पृष्ठ-59

6. प्रश्न का भाव-भाषा गत शुद्ध उत्तर होने पर ***एक-एक*** अंक देय है। $2 \times 1 = 2$

(क) स्वकार्यं त्यकत्वा अपरस्य सहकारः श्रीनायारस्य परमधर्मः आसीत्।

(ख) षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्।

7. शुद्ध उत्तर पर एक अंक निर्धारित है। $2 \times 1 = 2$

उत्तर :

(क) कुर्वन्नेवेह कर्माणि शतं समाः जिजीविषेत्।

(ख) युष्मद् शब्दः, सप्तमी विभक्तिः।

8. उत्तर : $2 \times 1 = 2$

(क) कस्याः ?

(ख) कस्मै ?

खण्डः 'घ'

(संस्कृत-साहित्य-परिचयः)

9. महाकवि बाणभट्ट ***अथवा*** दाराशिकोह में से ***एक*** का संक्षिप्त परिचय हिन्दी में लिखने पर विषय-संयोजन, भाषा-भाव की स्पष्टता पर **4** अंक देय हैं। अशुद्धता एवं विषयान्तर होने पर अंक काट लिए जाएँ। 4

10. ग्रन्थ परिचय पर भी उपरोक्त नियम लागू है। 4

(i) पाषाणीकन्या

(ii) सिंहासनद्वात्रिंशिका

खण्डः 'ङ'

(छन्दोऽलङ्कार-परिचयः)

11. दो छन्दों के शुद्ध संस्कृत भाषा में लक्षण-उदाहरण स्पष्ट करने पर पूर्ण अंक और अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $2 \times 4 = 8$

12. अलंकार के लक्षण-उदाहरण पर भी उक्त नियम लागू है। $2 \times 4 = 8$

खण्डः 'च'

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्)

13. पूछे गए कारक, सन्धि, समास की परिभाषा के शुद्ध तथा स्पष्ट होने पर क्रमशः **2, 2, 2** अंक निर्धारित हैं। उदारता मर्यादित होनी चाहिए। $2 \times 3 = 6$

खण्डः 'छ'

[बहुविकल्पीय-वस्तुनिष्ठप्रश्नाः]

14. (क) (i) तान् + ते

(ख) (i) वृद्धिसन्धिः

(ग) (iv) त्वय्येवम्

(घ) (i) अर्थस्य काश्यम्

(ङ) (iii) महर्षिः

(च) (iv) तत्पुरुषः

(छ) (iii) तेन

(ज) (ii) षष्ठी

(झ) (iii) दा

(ञ) (i) लट्लकारः

(ट) (i) तव्यत्

(ठ) (iii) स्वीकृत्य

(ड) (ii) द्वितीया

(ढ) (ii) स्मृतः

(ण) (i) धनम्

(त) (iii) निस्सारः $16 \times 1 = 16$

SET – D

खण्डः 'क'

(अपठित-अवबोधनम्)

1. गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्न के उत्तर में संस्कृत व भाषा की शुद्धता होने पर प्रत्येक शुद्ध सटीक उत्तर के लिए **2** अंक देय हैं। अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $5 \times 2 = 10$

उत्तर :

(क) गङ्गाम् उभयतः ग्रामाः आसन्।

(ख) मण्डूकानामधिपतिः गङ्गादत्तः आसीत्।

(ग) सः विनैव परिश्रमं प्रभुत्वं प्राप्नोत् अतः गर्वितः अभवत्।

(घ) केचित् प्रमुखाः भेकाः गङ्गादत्तं कूपात् बहिः कर्तुम् उद्यताः अभवन्।

(ङ) गंगादत्तः चाटुकारैः सह मन्त्रणाम् अकरोत्।

खण्डः 'ख'

(रचनात्मक-कार्यम्)

2. विषय-भाव-भाषा की अनुकूलता व शुद्धता होने पर मूल्यांकनकर्त्ता **12** वाक्यों के लघु निबन्ध पर अपने विवेक से अंक प्रदान कीजिए। 6

खण्डः 'ग'

(पठित-अवबोधनम्)

3. प्रस्तुत गद्यांश 'शाश्वती' (द्वितीयो भागः) के पृष्ठ-78 नवमः पाठः 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' तथा पृष्ठ-86 दशमः पाठः 'दीनबन्धुः श्रीनायारः' से संकलित हैं। पाठ नाम, कवि नाम, रचना का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक, सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

4. प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती' के द्वितीयः पाठः पृष्ठ-15, 'रघुकौत्स संवादः' तथा षष्ठः पाठः पृष्ठ-57 'सूक्तिसुधा' पाठ से संकलित हैं। मूल ग्रन्थ, पाठ का नाम, कवि का नाम के लिए $1\frac{1}{2}$ अंक, सरलार्थ के लिए $2\frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं। $1 \times 4 = 4$

5. सूक्ति की भावार्थ स्पष्टता पर **2 + 2** अंक निर्धारित किए गए हैं। छात्र इसमें अन्य भाषा के द्वारा भाव साम्य दिखला सकता है। $2 + 2 = 4$

(क) पञ्चमः पाठः 'शुकनासोपदेशः', पृष्ठ-48

(ख) चतुर्थः पाठः 'कर्मगौरवम्', पृष्ठ-39

(ग) प्रथमः पाठः 'विधयाऽमृतमश्नुते', पृष्ठ-2

(घ) अष्टमः पाठः 'भूविभागाः', पृष्ठ-75

6. प्रश्न का भाव-भाषा गत शुद्ध उत्तर होने पर ***एक-एक*** अंक देय है। $2 \times 1 = 2$

उत्तर :

(क) पशुहत्या मनुष्याणाम् आक्रीडनम्।

(ख) प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनम्।

7. शुद्ध उत्तर पर ***एक*** अंक निर्धारित है। $2 \times 1 = 2$

उत्तर :

(क) बुद्धियुक्तः सुकृतदुष्कृते जहाति।

(ख) तत् शब्दः पश्चमी विभक्ति।

8. उत्तर : $1 \times 2 = 2$

(क) कस्मात् ?

(ख) केन ?

खण्डः 'घ'

(संस्कृत-साहित्य-परिचयः)

9. श्री चन्द्रशेखर वर्मा ***अथवा*** महाकवि बाणभट्ट में से ***एक*** का संक्षिप्त परिचय हिन्दी में लिखने पर विषय-संयोजन, भाषा, भाव की स्पष्टता पर **4** अंक देय हैं। अशुद्धता एवं विषयान्तर होने पर अंक काट लिए जाएँ। 4

10. ग्रन्थ परिचय पर भी उपरोक्त नियम लागू है। 4

(i) ईशावास्योपनिषद्

(ii) श्रीमद्भगवद्गीता

खण्डः 'ङ'

(छन्दोऽलङ्कार-परिचयः)

11. दो छन्दों के शुद्ध संस्कृत भाषा में लक्षण-उदाहरण स्पष्ट करने पर पूर्ण अंक और अशुद्धता होने पर अंक काट लिए जाएँ। $2 \times 4 = 8$

12. अलंकार के लक्षण-उदाहरण पर भी उक्त नियम लागू है। $2 \times 4 = 8$

खण्डः 'च'

(अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्)

13. पूछे गए कारक, सन्धि, समास की परिभाषा के शुद्ध तथा स्पष्ट होने पर क्रमशः **2, 2, 2** अंक निर्धारित है। उदारता मर्यादित होनी चाहिए। $2 \times 3 = 6$

खण्डः 'छ'

[बहुविकल्पीय-वस्तुनिष्ठप्रश्नाः]

14. (क) (i) पित्रा + उक्तम्

(ख) (ii) तद्धावतः

(ग) (i) याण्सन्धिः

(घ) (iii) महान् अन्धकारः

(ङ) (iii) कालखण्डे

(च) (iv) द्वन्द्वः

(छ) (i) अहम्

(ज) (iii) प्रथमा

(झ) (i) वृत्

(ञ) (iv) लट्लकारः

(ट) (i) क्त

(ठ) (i) कुर्वाणः

(ड) (ii) द्वितीया

(ढ) (iii) शरीरम्

(ण) (iii) व्यवहारः

(त) (iv) मित्रता $16 \times 1 = 16$